आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2718 • उदयपुर, शनिवार 04 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

भिण्ड (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 22 मई 2022 को श्रीमती विमला देवी स्पेशल विद्यालय जामना, भिण्ड मध्यप्रदेश में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् शिवभान सिंह जी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 61, कृत्रिम अंग वितरण 36, कैलिपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् प्रवीण कुमार जी फुलपगारे (ए.डी.एम.साहब, जिला भिण्ड) अध्यक्षता श्रीमान् शिवभान सिंह जी (संस्थापक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् शिवप्रताप सिंह जी भधोलिया (समन्वयक जन अभियान परिशद), श्रीमान् पवन जी भास्त्री (भागवताचार्य समाजसेवी), श्रीमान् उपेन्द्र जी व्यास (समाजसेवी), श्रीमान् हर्शवर्धन जी (सक्षम संस्थान, भिण्ड) रहे।

डा.रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भंवर जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेभा जी भोर्मा (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास, श्री हरीभा सिंह जी रावत (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

भारतीय सेना के सहयोग से नारायण सेवा का शिविर सम्पन्न

त्रिदिवसीय शिविर में नोर्थ कश्मीर के 410 दिव्यांगों को मिली चिकित्सा

नारायण सेवा संस्थान द्वारा गान्दरबल, श्रीनगर के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में बसे दिव्यांगों के लिए बुसन बटालियन, कंगन और 34 असम राइफल्स के सौजन्य से कंगन आर्मी गुडविल सैकेण्डरी स्कूल में त्रिदिवसीय कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि मेजर अनूप व केप्टन विपुल की मौजूदगी में तीनों दिन तक चले शिविर में संस्थान के डॉक्टर्स एवं प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिस्ट टीम ने 410 रोगियों को परामर्श दिया। 78 दिव्यांगों का केलीपर्स और कृत्रिम हाथ–पैर का माप लिया तथा 90 भाई–बहनों को शल्य चिकित्सा के लिए चिन्हित किया गया। शिविर में 70 फौजी–जवानों की टीम सहायता में लगी हुई थी। वही संस्थान की 15 सदस्य टीम ने अपनी सेवाएं दी। उन्होनें कहा कुछ सप्ताह बाद आर्मी के सहयोग से कृत्रिम अंग, केलीपर्स और सहायक उपकरण वितरण केम्प स्थानीय ग्रामीणों के लिए लगाया जाएगा।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 5 जून, 2022

- औरंगाबाद, बिहार
- कृषि उपज मण्डी, ओरछा रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी, म.प्र.
- जेबीएफ मेडिकल सेंटर, भारतीय ग्राम सदल्लापुर, राम धर्म कांठा के पास, गजरौला, उमरोह, उ.प्र.
- हनुमान व्यायामशाला, पटेल मैदान के पास, अजमेर, राज.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

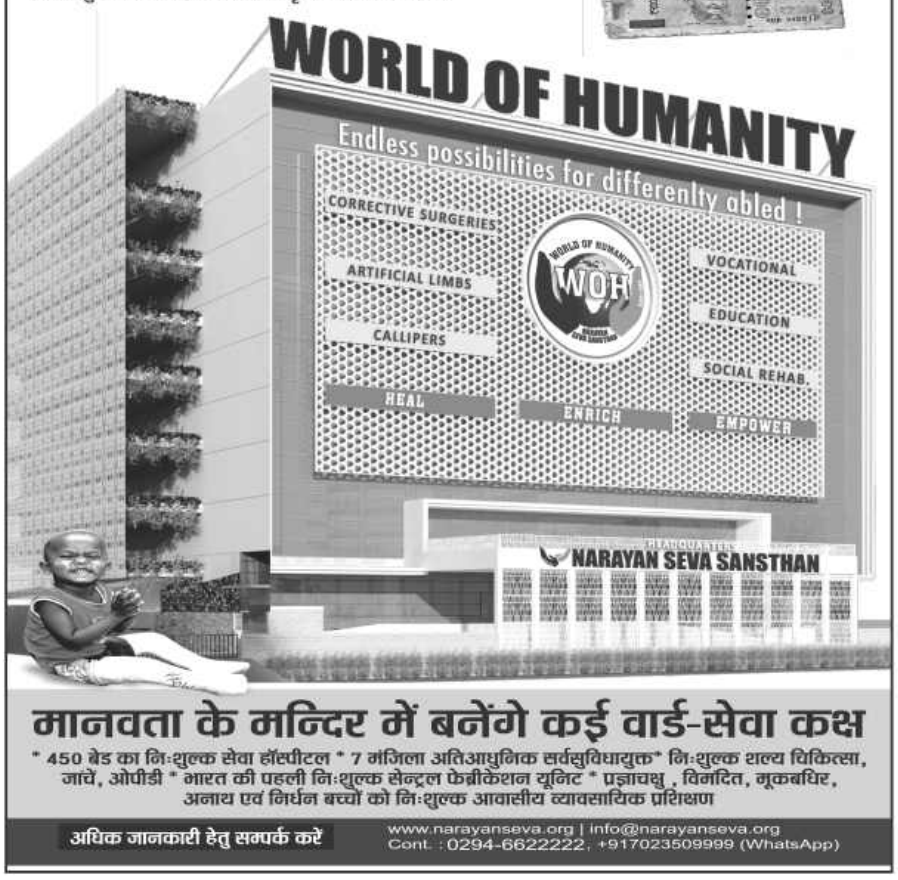

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष

* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

बुद्धिमान से करें मन की बात

एक छोटा–सा वाक्य या प्रसंग हमारा जीवन बदल सकता है। हम कोई भी कार्य एकनिष्ठ, तन्मय और एकाग्र होकर करें तो आनन्द आयेगा।

एक गुरु ने शिष्यों की शिक्षा पूर्ण होने के बाद अंतिम सीख देने के लिए शिष्यों को अपने पास बुलाया और 3मूर्तियाँ सामने रखकर पूछा कि इन तीनों में क्या अन्तर है? सभी शिष्यों ने उन्हें देखा, पहली मूर्ति के दो कानों में छेद थे। दूसरी के एक कान में और मुँह में छेद था। तीसरी मूर्ति के एक कान में छेद था।

गुरूजी ने शिष्यों से पूछा कि इससे आपको कुछ समझ आया, तो शिष्य कहने लगे –नहीं गुरुदेव। आप क्या सीख देना चाहते हैं, कृपया बताएँ।

गुरूजी ने कहा कि पहली मूर्ति के दोनों कानों में छेद हैं, इसमें हमें यह सीख मिलती कि दुनिया में कुछ लोग अपने मित्र की बातों को एक कान से सुनकर, दूसरे से निकाल देते हैं। उस पर ध्यान ही नहीं देते। ऐसे लोगों से कभी बात ही न करें। दूसरी मूर्ति के एक कान में और मुँह में छेद है– इससे यह समझना चाहिए कि कुछ लोग मित्रों के राज़ की बात एक कान से सुनते हैं और मुँह से कह देते हैं। ऐसे लोगों से कभी अपनी बात नहीं कहनी चाहिए और तीसरी मूर्ति के केवल एक कान में छेद है, इससे हमें यह सीख लेनी चाहिए कि कुछ समझदार लोग ऐसे भी होते हैं, जो सबकी सुनते हैं, पर कहते किसी को नहीं। बस, ऐसे ही लोगों को मित्र बनाना चाहिए। ऐसे व्यक्ति को अपना मित्र, सलाहकार, गुरु बनाइए, जिनसे आप मन की बात कर सकें। सलाह ले सकें या किसी विशेष विषय पर विचार–विमर्श कर सकें। जिनसे आप ज्ञान प्राप्त कर सकें। कहते हैं कि एक मरीज अपने डॉक्टर से कुछ नहीं छुपाता है। ठीक उसी तरह आपको भी अपने गुरु–मित्र सलाहकार से कोई बात नहीं छुपानी चाहिए, लेकिन उस मित्र का भी कर्तव्य है कि वो संबंधों की विश्वसनीयता च गोपनीयता बनाए रखे। ऐसे ही लोग यदि मित्र होंगे तो जीवन सुखी होगा।

सज्जन लोगों की संगत परफ्यूम की दुकान की तरह होती है। आप चाहे कुछ खरीदें या नहीं, आपको खुशबू जरूर मिलती है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

और समुद्र तट पर,सब वानर इकट्ठे हो गये। इधर विभीशणजी को जो रावण ने लात मारी और विभीशणजी आका ा मार्ग पे अपने साथियों के साथ खड़े हो के बोले– बड़े भ्राता, आपने भले ही मुझे लात मार के अपमान किया है, भले ही मुझे दंड दिया है, मेरा अपराध नहीं था। मैं तो आपको अच्छी राय ही दे रहा था।

सचिव बैद गुरु तीनि जौ,
प्रिय बोलहिं भय आस।
राज, धर्म, तन तीनि कर,
होई बेगिहीं नास।।

आपने मेरी बात नहीं मानी, कोई बात नहीं लेकिन अब भी विचार कीजियेगा। अब भी चितंन कीजियेगा, मनन कीजियेगा, आप ध्यान कीजियेगा। आप बार – बार दूरद ीं बनिये, मेरा भला किसमें है। आपका भला तो रामजी से माफी मागंने में है। मैं तो रामजी के पास जाता हूँ। ऐसे करके विभीशणजी आका ा मार्ग से उड़कर के रामादल में पधारे। इधर राम भगवान समुद्र तट पर पधार गये थे। कुछ वानरों ने देखा, ये राक्षस का भाई आया है। वहीं ठहर जाओ, वहीं ठहर जाओ। जब तक राम भगवान की आज्ञा नहीं मिलती, आप को मिला नहीं सकते। राम भगवान के पास सन्देश आया, रावण का भाई आया है। सुग्रीवजी ने कहा– नहीं नहीं प्रभु ये राक्षस लोग बड़े मायावी होते हैं। परन्तु हनुमानजी ने कहा–प्रभु, ये आपकी भारण आये हैं, ये लंका में पहले मेरे से मिल चुके हैं। इन्होंने ही कहा था–अ ोक वाटिका में सीताजी बिराज रही हैं। इन्होंने ही मुझे मार्ग बताया था। इनके निवास स्थान में मैंने मन्दिर देखा। इनके निवास स्थान पर–

रामायुध अंकित गृह, सोभा बरनि न जाइ।

नव तुलसिका बृंद तहँ, देखि हरष कपिराइ।।

हनुमानजी की वाणी सुनते ही प्रभु ने कहा–तुरन्त बुलाओ। मेरी भारण में जो कोई आया है, मैं उनका त्याग नहीं कर सकता।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट, छल छिद्र न भावा।।

उम्मीद से दूर हुई उदासी

रामकेवल–शेषावती निवासी काशा भटेरा जिला –सुल्तानपुर (उ.प्र.) खेतीहर साधारण परिवार का 6 वर्षीय पुत्र शैलेष जन्म से ही दोनों पाँव में पोलियो रोग के कारण उठने–बैठने से लाचार है। गाँव के आस–पास के शहरों में इलाज भी करवाया पर कोई कारगर नहीं हुआ। नारायण सेवा संस्थान के रतनलाल डिडवाणिया अस्पताल में इलाज के लिए बेटे को लेकर आए। श्री रामकेवल ने बताया कि गरीबी और ऊपर से बेटे के इस दुःख से पूरा परिवार ही टूट गया। इसी वर्ष उनके पड़ोस के गाँव के राम अचल गुप्ता ने हमें नारायण सेवा संस्थान में बेटे की जाँच की सलाह दी। वे भी यहाँ से इलाज करवा कर खुशी–खुशी लौटे थे। इस आशा की किरण के सहारे हम यहाँ आए। बायें पाँव का ऑपरेशन हो चुका है। दायें पाँव के ऑपरेशन किया गया, ऑपरेशन दवा, खाना–पीना और रहने का एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ। डॉक्टर की दिखाई उम्मीद ने हमारी उदासी को दूर कर दिया है।

सम्पादकीय

मनुष्य उन वस्तुओं और व्यक्तियों के पीछे अहर्निश पागलों की तरह भाग रहा है, जो स्थायी रूप से उसके पास रहने वाली नहीं है। दुःख इस बात का है कि इसे समझते–बूझते भी वह इससे आँख मूंदे हुए है। सब जानते हैं कि एक न एक दिन मरना है, किन्तु उस मरण को सुधारने का प्रयत्न नहीं करते। मनुष्य अच्छी–बुरी हर परिस्थिति में सत्य पथ पर अविचलित चलता रहे तो उसे जीवन में अपने–पराए का बोध और दुःख कभी अनुभव भी नहीं होगा। इच्छाओं के पूर्ण न होने पर ही मनुष्य दुखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जीवन के हर मोड़ पर लिये जाने वाले छोटे या बड़े निर्णयों का आधार हमारे उद्देश्य पर निर्भर है, जहाँ उद्देश्य नहीं वहाँ जीवन नहीं। यही बात हमारे ऋशि–मुनि, सन्त और शास्त्र भी करते रहे हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि आखिर उद्देश्य क्या हो और उसे निर्धारित कैसे करें? इसका हमारे पुरखों ने बहुत सीधा–सादा उत्तर भी तलाशकर हमें दिया है और वह है– केवल यह जान लें कि "मैं कौन," इस विषय में यदि हम जागरूक हो गए तो उद्देश्य तो मिला ही, जीवन की कई समस्याओं का हल भी मिल जाता है। "मैं" से ऊपर उठकर हम सत्य को, वास्तविकता को स्वीकार करने लगेंगे तो सन्देह के सारे बादल छंट जाएंगे। हम अपने भीतर स्पष्टता और शुद्धता महसूस करने लगेंगे। यही समझ, शक्तिरूप, मार्गदर्शक बनकर हमें मानवता के लिए करुणा, दया, संवेदना और समभाव के साथ जीवन जीने के लिए सक्षम बनाएगी। तब प्राणिमात्र से स्नेह–प्यार हमारे लिए स्वाभाविक और अपरिहार्य हो जाएगा। जीवन में आनन्द की हिलोर उठेगी, समस्याओं के बन्धन टूट जाएंगे। जीवन उन्मुक्त हो उठेगा।

कुछ काव्यमय

जब तक भू पर एक भी, बाकी रहे अनाथ।
तब तक कैसे बैठ लें, धरे हाथ पर हाथ।।
जिनके मन में उपजते, सेवा के सद्भाव।
नाविक बन खेते प्रभु, उनकी जीवन नाव।।
दीन दुःखी की पीर हर, देना होगा त्राण।
तभी मुखर कुरआन हो, वाणी पिटक पुराण।।
कदम–कदम पर हे प्रभो, उठते ये उद्गार।
आंसू ना देखूं कहीं, नहीं सुनूं चीत्कार।।
सेवा–रथ के सारथी, बनना होगा आज।
गीता–ज्ञान मिले तभी, समरस बने समाज।।

अपनों से अपनी बात

मीठी वाणी और सद्व्यवहार

जावेद मियाँ के पड़ोसी जाहिद भाई शहद बेचकर अमीर हो गए। एक दिन जावेद मियाँ अपनी बीवी से बोले... मैं भी कल से साइकिल के पंक्चर निकालने का काम छोड़.. शहद बेचूंगा। बीवी ने समझाया.... शहद का धंधा बाद में करना.... पहले जरा सा शहद सा मीठा बोलना तो सीख लो। बीवी की बात को अनसुना कर जावेद लम्बी तान कर सो गए। दूसरे दिन सवेरे उठे और शहद के थोक व्यापारी से शहद का कनस्तर उधार लेकर ..... .शहद लो शहद.... पुकारते कस्बे के गली मोहल्ले में घूमते रहे .....मगर उनकी कर्कश आवाज के कारण किसी ने उनकी तरफ देखा भी तो मुँह मोड़ लिया.....।

शाम को हारे थके ज्यों–का –त्यों कनस्तर उठाए वे घर पहुँचे और मुँह लटका कर बैठ गए। बीवी ने उन्हें फिर समझाया कि जो खुशमिजाज और मीठा बोलते हैं, उनकी तीखी मिर्च भी हाथों–हाथ बिक जाती है..... जबकि कर्कश बोलने वालों से लोग 'शहद' भी खरीदना पसन्द नहीं करते।

इस प्रतीकात्मक कहानी का सार यही है कि यदि हम विनम्र हैं तो हमारे साथ दूसरों का व्यवहार भी नम्र होगा। नम्रता वाणी से झलकती है। मीठी वाणी बोलने वाले की इन्सान से तो क्या....ईश्वर से भी निकटता बढ़ जाती है। लाठी और पत्थर की चोट से भी ज्यादा घातक होती है' अपशब्द' अथवा अहंकार युक्त वाणी की चोट। बरसों पुराने सम्बन्ध भी यह झटके से तोड़ देती है.....। सज्जनता की परीक्षा पहले वाणी फिर व्यवहार से होती है.....आपका दृष्टिकोण सकारात्मक होगा तो वाणी में कर्कशता और 'मूड' में उखड़ापन आ ही नहीं सकता। मीठी वाणी और सद्व्यवहार का फल भी सदैव मीठा होता है। यह व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला भी है।

–कैलाश 'मानव'

सफलता के सोपान

हमारे लिये बहुत अच्छी बातें हैं। जो माली है, जो बगीचा तैयार करता है, वो अच्छे–अच्छे सुन्दर फूल लेकर अपने बगीचे में लगाता है। वो कांटे के पेड़ नहीं लगाता है। हम भी अपने जीवन में कांटे नहीं बोयें, सुन्दर – सुन्दर सुगन्धित पुष्प लगायें, उसके लिए अच्छा है आप अच्छा देखें, आप क्या चैनल देखते हैं? आप क्या खबर पढ़ते है? आप वातावरण में क्या देख रहे है? उस पर आपके जीवन पर बहुत असर पड़ेगा। आप कभी गंदी चीजें नहीं देखें, आप नकारात्मक चीजें नहीं देखें, ना ही नकारात्मक सुनें। गांधी जी के तीन बन्दर थे, पहला ना ही बुरा सुनो, न बुरा देखो,

न बुरा बोलो, ये तीन बन्दर और इन तीन बन्दर से बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। गांधी जी ने एक बात बहुत सुन्दर कही थी मैं नहीं मेरी जीवन पोथी बोले। मतलब मेरा जीवन जो चल रहा है मैं किसी में लिख दूं वो नहीं बोले, मेरा जीवन जैसा है उससे प्रेरणा मिलनी चाहिये।

हम भी तीन बन्दर की तरह अपने जीवन में ये आत्मविश्वास कर लें, न बुरा देखेंगे न बुरा सुनेंगे, न बुरा बोलेंगे, आप देखेंगे कि आप चमकने लग जायेंगे, आप विश्व में अलग से दिखने लग जायेंगे। आपका मान सम्मान बढ़ जायेगा। आपको सब चाहने लग जायेंगे। आप सफलता में बहुत आगे बढ़ जायेंगे। आप सफलता के अन्तिम सोपान तक पहुंच जायेंगे। ये कुछ सत्य है जो हमारे जीवन में उतरने चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अधिकारी के प्रस्ताव का कई ट्रस्टियों ने विरोध किया। नारायण सेवा एक स्वयंसेवी संगठन जो जनहित में कार्यरत था जबकि व्यापार मंडल विशुद्ध रूप से व्यापारियों का संगठन है, नारायण सेवा के प्रस्ताव के साथ इसे जोड़ना उचित नहीं। काफी देर चर्चा चली, तर्क–वितर्क हुए मगर अन्ततः नारायण सेवा को आधे मूल्य पर जमीन देना तय हो गया।

कैलाश ने जब यह सुना उसे एक और सबक मिला कि परिणाम जो भी निकले, प्रयत्न करने में कभी कोई कसर बाकी नहीं रखनी चाहिये। अब जमीन के लिये 43 हजार रु. एकत्र करना था। यह भी कोई छोटी राशि नहीं थी मगर कैलाश को विश्वास था कि रुपये एकत्र हो जायेंगे। उसे पी.जी.जैन के बाहर से चन्दा करवाने के प्रस्ताव का भी स्मरण था मगर इसके लिये फिलहाल वह बाहर जाने को तैयार नहीं था। कैलाश ने अपने सहयोगियों, मित्रों, व्यवहारियों से अनुरोध किया कि वे एक–एक, दो–दो हजार रु. बिना ब्याज के दे सकें तो साल भर में उन्हें वापस लौटा देंगे। प्रो. के.एस. हिरण उसके निकटस्थ सहयोगी थे, उन्होंने अपनी पत्नी के नाम पर 2 हजार रु. सहायता के रूप में दिये। कृषि महाविद्यालय के डॉ. आर. सी.मेहता ने भी मदद की। कई लोगों ने हजार–हजार, दो–दो हजार ब्याज पर भी उधार दिये। महीने भर में ही 43 हजार रु. एकत्र हो गये। रुपये जमा कराने कैलाश यू. आई.टी. गया तो वापस उसी अधिकारी से सामना हुआ। कैलाश ने उन्हें धन्यवाद दिया तो वे खिसियाते हुए बोले –मेरा तो कोई योगदान नहीं रहा, मुझे आप धन्यवाद क्यूं दे रहे हैं। कैलाश ने तब हंसते हुए कहा–कोई बात नहीं, अगर आप ऐसा सोचते हैं तो अब योगदान कर दीजिये, अभी तो बहुत काम शेष है। अधिकारी कैलाश की उसके प्रति निष्पाप भावना से प्रसन्न हो गया। इसके बाद से जमीन का कब्जा दिलाने तक उसने पूरा सहयोग किया। जमीन हिरणमगरी सेक्टर 4 में मिल गई जो 7350 वर्गफीट थी।

इधर पिताजी का इलाज चल ही रहा था। 3 माह बाद बड़े भाई राधेश्याम उन्हें अपने साथ कोटा लेकर चले गये। 1986 का उत्तरार्द्ध चल रहा था। कैलाश उनसे मिलने निरन्तर कोटा जाता रहता था। एक बार पिताजी, माताजी से बोले – देख सोहनी, शरीर की मुझे चिन्ता नहीं है, दुःख सिर्फ इस बात है कि अगर यह शरीर गंगा किनारे छूटता तो ज्यादा संतोष रहता। माताजी भले ही मामूली गृहिणी रही हो मगर वे किसी विदुषी से कम नहीं थी, बोली – अजी ! आप तो आत्मा में निवास करने वाले हो, शरीर कहां छूटता है इसकी चिन्ता क्यूं करते हो? पत्नी की बात सुन कर पिताजी, मां के कायल हो गये और बोले –वाह! वाह! क्या बात कही है, तेने मेरी आखिरी चिन्ता से भी मुक्ति दिला दी।

अंश - 115

ठीक से हाथ धोना जरुरी

इस बात पर गौर कीजिए कि दिन भर में आप कितनी चीजों को हाथ लगाते हैं। घर से लेकर बाहर तक न जाने कितनी चीजों को दिन भर हाथ लगाना पड़ता है, जिन्हें गिनना भी मुश्किल है। ऐसी चीजों पर मौजूद कीटाणु आपके हाथ से होते हुए आपके मुंह द्वारा शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

दिन भर हाथ में दस्ताने पहन कर काम करना भी मुश्किल होता है क्योंकि इन कीटाणुओं से तभी बचा जा सकता है। मगर हैंडवाश एक उपाय है जिससे इन कीटाणुओं से होने वाली बीमारी से आसानी से बचा जा सकता है। मगर एक हकीकत यह भी है कि बच्चे तो छोड़िए बड़े भी ठीक से हाथ धोना नहीं जानते। बच्चों को ठीक से हाथ धोना सिखाना जरुरी है क्योंकि बच्चे जल्दी बीमार होते हैं। हर साल लगभग 40 लाख से भी ज्यादा बच्चे दस्त के कारण संक्रमण के शिकार हो जाते हैं। दस्त से हुए संक्रमण से बच्चों की जान भी चली जाती है। हेल्दी हैंड वॉश का तरीका शायद ही लोगों को पता होगा।

अच्छी तरह हाथ धोना बचपन से ही सिखाया जाना जरूरी हैं। हाथ धोने के लिए लिक्विड साबुन का ही प्रयोग ठीक रहता है।

अगर आप यह सोचते हैं कि किसी भी बीमारी के लिए एंटीबायोटिक देना सबसे बेहतर तरीका है, तो आपको एक बार फिर से सोचना चाहिए। बीमारी फैलाने वाले कीटाणु से बचने का सबसे बेहतर तरीका है हेल्दी हैंड वॉश।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्डी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

कबीरदास जी कहते हैं कबीर ठगा जाना, पर ठगना मत। प्रसंग आता है। घोड़ा गाँव के जमींदार ने खरीदना चाहा। साधारण व्यक्ति ने कहा ये घोड़ा मेरे परिवार का सदस्य है। बहुत प्रिय है मैं तो नहीं बेच सकूंगा, और जमींदार एक दिन रास्ते में भिखारी जैसे खड़ा हो गया। दुर्बल जैसे खड़ा हो गया। विकलांग जैसे खड़ा हो गया, और घोड़े पर जा रहे थे। हाथ जोड़ कर बोला मेरे पैर चल नहीं पाते। मैं चल नहीं पाता। पास के गाँव में जाना है, और उसको दया आ गयी। उसने विश्वास किया। उसको घोड़ा दे दिया। घोड़े पर बैठे 20 कदम आगे चलकर के नकली दाढ़ी मूंछ उतार दी। बहुरुपियापन उतार दिया, और कहा जा मैं तेरा घोड़ा नहीं दूंगा। मैंने ठग लिया तुझे। तूने बेचा नहीं, मैंने निःशुल्क ले लिया।

उन्होंने कहा था जमींदार साहब तनिक रुकिये। इसलिए रुकिये कि आपने मुझे ठगा। आप विकलांग बने, आप बीमार आदमी बने, आप जर्जर तन बने। बस, ये घटना किसी को मत बताना। अन्यथा लोग दिव्यांगता, गरीबों पर, असहाय पर भरोसा करना छोड़ देंगे। आप घोड़ा भले ही ले जाइये। पर ये कहना मत। मैंने आप पर विश्वास किया तो आपने मुझे लूट लिया।

ये मत कहना। भैया कैलाशचन्द्र क्या है? एक नश्वर काया है साढ़े तीन हाथ की। 206 हड्डियाँ, 589 माँसपेशियाँ पूरे शरीर में बहता हुआ रक्त। गर्दन में श्वास नली और आहार नली 110 ग्राम का लीवर मुट्ठी के आकार जितना। हृदय मधुमक्खी के छत्तों जैसे, दो फेफड़े, लम्बी सी दो आँतें, और क्या है? ये उतार दो तो डरावना लगता है।

कपड़े भी खोलकर रख दे तो पहचान नहीं पाते। ये काया किसकी है? कपड़ों से पहचान हो रही है। कई लोगों को निर्वस्त्र पहचानना। पहचान नहीं पाता। कौन कैलाश है? कौन क्या है? अनित्य है शरीर, और साधना करनी है समभाव की, वैराग्य की, कोई लालच नहीं, आसक्ति को छोड़ना है, इन्हीं भावों के साथ प्रभु ने अनासक्त होकर कई शिविर करवाये। वो ही गाँवों में गये। अद्भुत दृश्य, ऐसा महसूस हुआ कि ढोल गाँव के निवासी जैसे आदरणीय कन्हैयालाल जी साहब, जवाहरमल जी सूरत में व्यापार करते थे। बोले आप हमारे गाँव में केम्प कीजिए कन्हैयालाल जी साहब ने कहा– आप तो 12 ही महीने की हाँ, भरिए। हर महीने एक केम्प कीजिए। 6,500 हजार रुपया एक शिविर का आपकी दक्षिणा है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 468 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023